प्रथम अध्याय
श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित का व्यक्तित्व और कृतित्व
प्रथम अध्याय

श्री मदुरा प्रसाद दीक्षित का जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व

महामहोपाध्याय श्री मदुरा प्रसाद दीक्षित आधुनिक गुरु के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान है। जिन्होंने अपनी अमूल्य कृतियों से आधुनिक संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। इनके जीवन-परिचय और कृतित्व के बारे में कुछ जानना अपेक्षित है। इनकी रचित पुस्तकों में इनके विषय में कुछ जानकारी मिलती है, जिसके आधार पर निम्न तथ्यों का पता चलता है।

जीवन वृत्त

महामहोपाध्याय श्री मदुरा प्रसाद दीक्षित का जन्म उत्तर प्रदेश के हरोदेई जिले के अंतर्गत अगवन्तर नगर नामक स्थान पर कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के एक गांव में हुआ था। इनका जन्म संवत् 1935 अगस्त मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को हुआ था। इसी संवत के आधार पर इनका जन्म सन 1878 ई. माना जाता है।

वंश परम्परा:-

श्री मदुरा प्रसाद दीक्षित के पितामह हरिहर प्रसाद दीक्षित आयुर्वेद साहित्य अनेक शास्त्रों के पाठ्य थे। यशस्वी वैद्य होने के कारण उन्हें “पीरूष पाणि” कहा जाता था। पंडित हरिहर  

1 संस्कृत साहित्य का इतिहास - वाचस्पति गैरोला, पृ. 818
आधुनिक संस्कृत नाटक - रामजी उपाध्याय, पृ. 467
संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक - श्याम शर्मा, पृ 467
2 भक्त सुदर्शन नाटक की भुमिका - सरलाशिव दीक्षित - पृ. 2
दीक्षित के पाँच पुत्र थे, जिनमें द्वितीय श्री बदरीनाथ दीक्षित भी अपने पिता के वैद्यक और पाण्डित्य कार्यों को संभालते थे। अतः वे भी वंश के सम्पादक को सुरक्षित रखने में सफल रहे। इनका विवाह कुंती देवी के साथ हुआ। मधुरा प्रसाद दीक्षित इन्हीं बदरीनाथ और कुंती देवी के पुत्र थे।

प्रारम्भिक शिक्षा एवं विवाह:-

एक संस्कृतज विद्वान परिवार की संतान होने के कारण इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। श्री मधुरा प्रसाद दीक्षित प्रतिभा सम्पन्न छात्र थे। किसी समृद्ध और प्रतिष्ठित परिवार का प्रतिभाशाली छात्र उस समय विवाह की कुछ काम का शिकार अवश्य हो जाता था।

मधुरा प्रसाद दीक्षित की प्रतिभा को देखकर समीप के ही एक गाँव के विद्वान श्री नामक के पाण्डित शिवनारायण पाण्डे ने अपनी सुपुत्री गौरी देवी का विवाह सन् 1948 में इनके साथ कर दिया। इस समय इनकी आयु केवल 13 वर्ष की थी। मधुरा प्रसाद दीक्षित और गौरी देवी से एक पुत्र और तीन पुत्रों का जन्म हुआ। पुत्रों के नाम क्रमशः सदाशिव दीक्षित, बैंकुमानाथ दीक्षित तथा रामनाथ दीक्षित थे। ज्वेर्च पुत्र सदाशिव दीक्षित ही अपने पिता के वैद्यक के एक मात्र उत्तराधिकारी बिधत हुए। वे भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। मधुरा प्रसाद दीक्षित की कृतियों की भूमिका लिखकर उन्हें प्रकाशित करवाने का श्रेय भी सदाशिव दीक्षित को ही जाता है। इनके नौ पीत्र हैं जिन्होंने विविध राजकीय और अराजकीय उच्च पदों पर कार्य करते
हुए पर्याप्त प्रश्नों और समृद्धि अर्जित की है। मधुरा प्रसाद दीक्षित की कुलवल्ली संस्क्रेप में इस प्रकार है।

हरिडार दीक्षित

बदरीनाथ दीक्षित (कुल्ली देवी पत्नी)

मधुरा प्रसाद दीक्षित (गोरी देवी पत्नी)

सदाशिव दीक्षित

वैकुण्ठनाथ दीक्षित

रामनाथ दीक्षित

उच्च शिक्षा

मधुरा प्रसाद दीक्षित संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वाराणसी चले गए। वहाँ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय से कठिन परिश्रम और लगातार के साथ अध्ययन करते हुए साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध और बीसवीं शती के पूर्वांचल में श्रावणी और रानागंडकी के अवसरों पर प्रतिवर्ष काशी की सभी संस्कृत पाठशालाओं, राजकीय संस्कृत महाविद्यालयों तथा काशी हिंदी विश्वविद्यालय के ओरियंटल कॉलेज में समारोह के साथ-साथ मध्यस्थ विद्यार्थी की देख-रेख में शास्त्राथ्य आयोजित होते रहे हैं। अनेक प्रतिमाशाली वाद निपुण छात्रों के साथ-साथ मधुरा प्रसाद दीक्षित ने भी इन अवसरों
पर छात्र जगत में प्रचुर यथ प्राप्त किया। इन शास्त्रायों में भाग लेने वाले छात्रों की वाक्यशिक्षित, भाषण-कल्प और तर्क-शक्ति का विकास हो तो होता ही था। अपने अध्ययन के लिए ग्रंथी विषय के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों के अध्ययन में अभ्यस्त भी जाग्रत होती थी। मधुरा प्रसाद दीक्षित ने न शास्त्रायों में भाग लेकर संस्कृत भाषा पर प्रगाढ अधिकार प्राप्त किया।

साहित्याचार्य होने के कारण उन्होंने अपना स्वाध्याय आगे बढ़ाया और काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र में निपुणता प्राप्त की। विद्वान समाज में सम्मानजनक स्थान इन्होंने अपनी प्रतिभा और स्वाध्याय के बल पर ही प्राप्त किया।

कार्य श्रेणी:-

इनकी प्रतिभा और संस्कृत भाषा पर प्रगाढ अधिकार के कारण विद्वान समाज इससे परिचित तो हो ही गया था। लाहौर (पाकिस्तान) के एच्विसन कॉलेज की ओर से इन्हें अध्यापन कार्य के लिए सादर आमंत्रित किया गया। यह इनका प्रथम कार्य-श्रेणी था। अपने अध्ययन कार्य में वे मनुस्मृति और गीता पढ़ते थे। उस कॉलेज में धार्मिक वर्ग और राजधानी से ही अधिक छात्र आते थे। वहाँ दीक्षित जी "धर्म गुरु" के नाम से प्रख्यात थे। 1921 में इन्होंने एच्विसन कॉलेज से ल्याग पत्र दे दिया। इस सम्बन्ध में दीक्षित जी स्वयं लिखते हैं। ...... मैं अध्ययन करता हुआ सन् 1905 से अंग्रेजों के अन्याय आत्माकार से उत्तर रहता, उपरादेश में अभिसंचि रहती यथा समय इन्हीं के प्रस्थ, तिलक जी का केसरी

1 अन्योक्ति तरंगिणी - भूमिका, पृ. - 1
अखबार पढ़ता था। सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन में लाहौर एचिसन कॉलेज से राजकुमारों का ग्यारह वर्ष का अध्यापन कार्य छोड़ दिया।

1921 से 1923 तक वे असहयोग आन्दोलन में छूट-फूट भाग लेते रहे। इसके बाद वे सोलन आ गए। वहाँ उन्हें पर्यावरण समय मिलता था। अतः नवयुवकों में शैर्ष-शैर्ष, साहस, सहिष्णुतादिव गुणों को उद्वृत्त करने के लिए अनुकरणीय सुदृढ़ता नामगेबुद्धि प्राप्त: स्मरणीय महरणा प्रताप सिंह का बीर प्रताप नाटक लिखा जिसका अभिनय लाहौर ओरियंटल (गवर्नमेंट) कॉलेज के प्रधान प्रोफेसर डॉ. लक्ष्मण ख़स्ती ने दो दिन करवाया। प्रथम दिन 2 हजार और द्वितीय दिन 4: सात हजार जनता अपना गई थी। सभी जनता ने रचना और उसके गुणों की भूरिभूरी प्रशंसा की।

1923 में मधुरा प्रसाद दक्षित का कार्य क्षेत्र सोलन बनाया गया। सोलन नरेश दुर्गा सिंह को वे बैंकिंग और पौराणिक प्रत्येक की शिक्षा देते थे। फलत: उन्हें राजगुरु के पद पर सूचित किया गया। श्री दुर्गासिंह स्वयं भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत उपयुक्त बन गए। बीर प्रताप नाटक की रंगमचित्त सफलता और ख्याति से प्रभाववाद होकर श्री दुर्गासिंह ने तारिक्षी संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की।

---
1 अनुभूति तरंगिणी - भूमिका, पृ. - 1
2 अनुभूति तरंगिणी - भूमिका, पृ. - 1
3 अनुभूति तरंगिणी - भूमिका, पृ. - 1-2
राजगुरु के पद के अतिरिक्त महाराज सोलन ने दीक्षित जी को तारिक्षित संस्कृत महाविद्यालय की देख-रेख और संचालन के लिए इसका प्रधानाध्यापक पद भी सौंप दिया। भारतीय स्वतंत्रता के एक वर्ष बाद सन 1948 में जब हिमाचल सरकार ने इस विद्यालय को अधिकृत किया तब उनकी आयु लगभग 70 साल हो गई थी। 12 अप्रैल 1948 को अपने प्रधानाध्यापक का कार्यभार श्री भवनीदत्त आचार्य को सौंप दिया। दीक्षित जी के कार्यकाल में तारिक्षित संस्कृत महाविद्यालय भारत की प्रतिष्ठित संस्थाओं में अग्रण्य इस महाविद्यालय का विशाल पुतकालय आज भी समृद्ध और दुर्लभ प्रस्तुतियों से भरा हुआ है। यह दीक्षित जी के परिश्रम और लगन का जीता जामीता समारक है।

सोलन नरेश के आश्रय में रहते हुए इनके कार्यों की व्यक्तित्व पर ध्यान गए बिना नहीं रहता। सामान्य दीक्षित जी अपने को अत्यन्त व्यस्त रहते थे। यही पर रहते हुए इन्हें साहित्य साधनों का प्रचुर अवसर मिला। इनकी अधिकांश रचनाएं इसी सोलन प्रवास के काल में लिखी गईं। सोलन के राजगुरु और राजकिी के नाते राज दरबार से लेकर सामान्य जनता तक में इनका बड़ा आदर था। नवरात्र-महोत्सव प्रतिवर्ष सोलन में मनाया जाता था। किन्तु मधुरा प्रसाद दीक्षित ने इसे नया रूप दे दिया। पूजा-पाठ के अतिरिक्त नाटक खेलने की परम्परा इन्होंने ही बनाई। इस कार्य में महाराजा दुर्गासिंह की धर्मपत्नी का इन्हें विशेष सहयोग मिलता था। भक्त सुदर्शन नाटक सर्वप्रथम नवरात्र-महोत्सव के अवसर पर ही अभिनीत किया था।

\[1\] तारिक्षित संस्कृत महाविद्यालय के प्रयोगों के आधार पर।
गया था। दीक्षित जी ने इस नाटक को दुर्गासिंह की धर्मपत्नी को ही समर्पित किया है। उनकी कार्यविधि की एक झांकी देखी जा सकती है।

1. सोलन नरेश दुर्गासिंह के वहां उपस्थित रहने पर प्रतिदिन उनसे मिलते और शास्त्रचर्चा के अतिरिक्त संस्कृत महाविद्यालय और राजकीय औरसेहारियों की प्रगति के लिए विचार-विमर्श करते।

2. राजदरबार से लेकर प्रतिष्ठित व्यक्तियों तक के यहां पहोचित कार्य करते।

3. विशेष यज्ञादि तथा धार्मिक महोत्सवों के आयोजित हाने पर मुख्य आचार्य का पद सम्भालते। सोलन नरेश के राज्य में जहां कहीं भी विशेष आयोजन होता उन्हें आमंत्रित किया जाता और उनकी उपस्थिति की गौरवपूर्ण समझा जाता। सोलन छोड़ने के बाद भी वे आजीवन सम्मानित राजगुरु बने रहे।

4. तारिकी संस्कृत महाविद्यालय में साहित्य का अध्यापन भी करते थे और प्रधानाचार्य का कार्यभार भी संभालते थे। इस संस्कृत महाविद्यालय को अग्रणी और पुस्तकालय को समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयास भी करते रहते थे।

5. शास्त्राध्यापन में उनकी रूचि छात्र जीवन से ही थी। जब वे एचिन्सन कॉलेज में अध्यापन करते थे तब आचार्य समाज व धर्मविलय के बीच मूर्ति पूजा, इश्वर की साकारता, निराकारता, पुराणों की सत्यता तथा कर्मक्रम की सार्थकता आदि पर

---

1 भक्त सुदर्शन नाटक का समर्पण पूजा।
शास्त्रार्थ हुआ करते थे। महुरा प्रसाद दीक्षित सनातन धर्मावलम्बी के प्रतिनिधि रूप में प्रायः इन शास्त्रार्थों में भाग लिया करते थे।

आर्य समाज के दो दिगज विद्वान चमूमति और आचार्य रामदेव के साथ 1922 में किसी अग्रेज पादरी के साथ वैदिक विषय पर वाद-विवाद हुआ। उसने दोनों विद्वानों को शिक्षा आमंत्रित किया। आर्य समाज मन्दिर में ईश्वरीय सत्ता पर आठ दिन तक शास्त्रार्थ चलता रहा। आचार्य रामदेव के एक प्रश्न का उत्तर मुख्य स्थित मिशन के एक पादरी से पूछ कर दिया। पादरी के एक प्रश्न का उत्तर रामदेव न दे सके। आचार्य रामदेव ने सोलन दीक्षित जी से सम्पर्क किया। दीक्षित जी ने अपनी तार्किक शक्ति से उसका उत्तर तो दिया ही एक प्रश्न, पूछ कर पादरी को निरस्त कर दिया और उसे अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी।

6. दीक्षित जी उच्च कोटि के व्यक्तित्व थे। वे संस्कृत-हिन्दी में धारा-प्रवाहा भाषण देते थे। व्यक्तित्वों के लिए प्रायः सोलन से बाहर जाते रहते थे। एक बार 1946 में श्रीप्रसंग त्र्युत में आनन्दमयी मां सोलन पठारी थी। एक दिन समाचार की अवस्था में आनन्दमयी माँ के मुख से अस्पष्ट शब्द सुनाई पड़े व्यक्तियों ने उन शब्दों को लिखित तौर पर कर

---

3 उपरिवर्ष से
लिया, परन्तु अर्थ स्पष्ट नहीं हुआ। दीक्षित जी ने इन शब्दों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की। मातृदर्शन नाम से वे व्याख्यायें प्रकाशित हुईं।

7. इन व्यस्तताओं के बीच भी वे स्वाभाव में निरत रहते थे। दर्शन, व्यक्तिगत और धर्मशास्त्र के अंतरिक्ष उन्होंने प्राकृति पालि और अप्रभाष भाषाओं का गहन अध्ययन किया। उन पर अपनी रचनाएं भी प्रस्तुत की।

हिमालय की उपत्यका में बसे सोलन के प्राकृतिक सौन्दर्य ने उन्हें अभिमूल्य कर रखा था। सोलन नरेश और तारिक एक राज्यों के प्रति उनकी अगाध ममता थी। सोलन से बाहर वे हजरियाँ (झांसी) में ही कुछ दिन रहे। जहां उनके ज्येष्ठ पुत्र सवारिश्व सेवा रत थे।

वाराणसी से संबंध:-

वाराणसी से उनका विशेष लगाव था। छात्र जीवन तो इन्होंने यहीं विदाया था। संस्कृत महाविद्यालय सोलन के कार्यक्षेत्र ज्यादा भी वे वाराणसी जाते थे। कुछ दिन वहां अवस्थ निवास करते। इस अवधियों में वे डॉ. सम्पूर्णानंद महामहोपाध्याय कविराज गोपीनाथ, श्री महेश्वर नन्द सरस्वती, डॉ. आदित्य नाथ झा जैसे विद्वानों के सम्पर्क में रहते।

---

1 भक्त सुदर्शन नाटक की भूमिका - पृ. 4
महामहोपाध्याय की उपाधि एवं सम्मानित

राय एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता ने जब चन्द बरवाई कृत पृथ्वी राज रासो का प्रकाशन प्रारंभ किया तो उसी समय कश्मीरी कवि जयानक कृत ‘पृथ्वी राज विजय’ नामक संस्कृत महाकाव्य उपलब्ध हो गया। तुलना करने पर पृथ्वी राज रासो की ऐतिहासिकता और प्रमाणिकता पर प्रश्न चिंतन लग गया। कुछ उसे अप्रमाणिक और जाली ग्रंथ मानते थे। कुछ उसे प्रमाणिक और कुछ मूल ग्रंथ को प्रमाणिक और प्रक्षेप युक्त मानते थे। ¹ अर्थ बोध में भी कठिनाइयाँ उत्पन्न होने लगी क्योंकि रासो की भाषा अपमानशी थी। ऐसे समय में मभुरा प्रसाद दीक्षित ने प्राचीन भाषाओं की अपनी विज्ञान का परिचय देते हुए अर्थबोध सम्बन्धी कठिनाइयों को हल किया। नागरी प्रचारिणी सभा कार्यों को पृथ्वी राज रासो के सम्पादन में सहयोग दिया। उनकी बहुत विज्ञान तथा पृथ्वी राज रासो के सम्पादन में सहयोग दिया। उनकी बहुत विज्ञान तथा पृथ्वी राज रासो के सम्पादन की उच्चगवर्गात्मक उपलब्धियों का समान करने के लिए तात्कालिक भारत सरकार ने सन 1936 में इन्हें महामहोपाध्याय की सर्वोच्च सम्मानित उपाधि से विभूषित किया।²

तात्कालिक कांग्रेसी नेता और शिक्षा मंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द इनका अत्यन्त आदर करते थे। ‘भारत विजय’ नाटक पर उत्तर प्रदेश की सरकार ने 13 मई 1946 को 200 रु. की

¹ हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ. सं. 45-50
² भक्त सुदर्शन, भूमिका पृ. 3
धनराशि दे कर इन्हें पुरस्कृत किया। काशी विद्यालय सभा ने दीक्षित जी को ‘विद्या-वारिधि’ से अभिनंदित किया। राजकीय संस्कृत परिषद् ने 10 मार्च 1946 को पाँच हज़ार रुपये का पारितौरिक देकर इन्हें सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल की ओर से भी पांच सौ रु. का पुरस्कार इसी वर्ष प्राप्त हुआ।

अंतिम समय:-

श्री मधुरा प्रसाद दीक्षित शिक्षित और समुच्छ परिवार का सुख 88 वर्ष की आयु तक भोगते रहे। धार्मिक प्रवृति के कारण वे काशी में ही शरीर त्याग करना चाहते थे। वार्षिक व दिनों में भी वे किसी रोग से पीड़ित नहीं हुए। अपने जीवन का अन्त निकट समझ कर वे अपने पैतृक श्री धन मोहन दीक्षित के साथ वाराणसी चले गए और अपने अंतिम समय तक वहीं उनके साथ विश्वनाथ गली में रहे। अपने परिवार के सभी सदस्यों से मिलकर उन्हें आशीर्वाद देकर मधुरा प्रसाद दीक्षित ने शाति पूर्वक संवत 2023 के भद्रपद मास की शुक्ल एकादशी, रविवार को शरीर त्याग दिया। इस तरह 1878 से 1966 ई. तक 88 वर्ष की दीर्घायु उन्होंने प्राप्त की।

अपनी इस लम्बी आयु के अंतिम समय में भी वे सोलन के राजगुरु तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सम्मानित प्राध्यापक बने रहे। अपने भीतिक शरीर का त्याग कर देने।

1 भक्त सुदीप, पुरूषोत्तम पृ. 3
2 भारत विजय पुष्पक से उद्धत सरकारी पत्र
के बाद भी वे अपनी संस्कृत-साहिना और कृतियों विशेषतः राष्ट्र-प्रेम से भरे नाटक के माध्यम से आज भी जीवित हैं।

परिवेश का दीर्घत जी पर प्रभाव:-

कवि हो या नाटककार, उस पर अपने युग के वातावरण और परिवेश का प्रभाव अवश्य पड़ता है। हिमालय की सुरम्य उपत्यका में बचपन के बाद ही इन्होंने निवास करना आरम्भ कर दिया था। इस रमणीय वातावरण का प्रभाव उनकी कविता क्षमता के उदयोग में सहायक हुआ। केली-कुतुबल और कविता रहस्य की भावनाओं में इसकी धारा विकास हुई। सोलन देसी रियासत था। इसके नरेश प्रणित और राजगुरु को धार्मिक कार्यों और अनुष्ठानों का ही सृंगम रखते थे। नाद-शिव वर्णन तथा भक्त सुदर्शन नाटक का मंचीकरण इस तथ्य के उदाहरण हैं।

स्वतंत्रता आन्दोलन के 90 वर्षों के समग्र इतिहास की झलक “भारत विजय” जैसे एक नाटक में समेट लेने का प्रयत्न किसी अन्य नाटककार के लिए दुर्दृष्ट कार्य है। इन आन्दोलनों के प्रभाव से वे परिचित थे। यही कारण है कि स्वतंत्रता की वास्तविक प्राप्ति के दस वर्ष पूर्व ही इस नाटक में गाथी जी को राज्य सौंप कर अंग्रेजों के भारत से चले जाने की अपनी भविष्यवाणी को मंचित कर दिया। भारत विजय पर लगाये गये प्रतिवेदन से दीर्घत जी की राष्ट्रीय विचारधारा की ओर बल मिला तथा ‘गाथी’ विजय लिखकर उनके जीवन को ही नाटकीय शैली में प्रस्तुत कर दिया। भारत के पूर्व इतिहास के गौरवपूर्ण पृष्ठों को
सत्त्रत्त्व के विविध आन्दोलनों को, राष्ट्रपिता गांधी की जीवन वृत्त को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने के कारण वे राष्ट्रीय नाटकार सिद्ध होते हैं।

मधुरा प्रसाद दीक्षित की कृतियाँ:–

महामहोपाध्याय दीक्षित जी की कितनी कृतियाँ है इनका विवरण न किसी संस्कृत साहित्य के इतिहास में है न उनकी कोई प्रस्तावली प्रकाशित हुई है। फलतः उनकी रचनाओं की वास्तविक संख्या निर्धारित नहीं की जा सकती उनकी कई रचनाएं अप्रकाशित हो रह गईं और उनकी पाण्डुलिपियों जीर्ण-शीर्षण तथा अपठनीय अवस्था में तारिक संस्कृत महाविद्यालय के पुरातकार में लुप्त हो रही हैं। उनकी प्रकाशित एवं उपलब्ध रचनाओं का काल क्रमिक प्रकाशनन विवरण निम्नलिखित है:–

<table>
<thead>
<tr>
<th>रचना</th>
<th>प्रकाशन वर्ष</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. वर्ण संकर जाति निर्णय</td>
<td>सन् 1930 ई.</td>
</tr>
<tr>
<td>2. भारत विजय नाटक</td>
<td>सन् 1947 ई.</td>
</tr>
<tr>
<td>3. असली पुष्टीराज-रासी</td>
<td>सन् 1952 ई.</td>
</tr>
<tr>
<td>4. मातृदर्शन</td>
<td>सन् 1952 ई.</td>
</tr>
<tr>
<td>5. शंकरविजय-नाटकमू</td>
<td>सन् 1953 ई.</td>
</tr>
<tr>
<td>6. पाणिनीय सिद्धान्त कौमुदी</td>
<td>सन् 1953 ई.</td>
</tr>
<tr>
<td>7. भक्त सुदर्शनमू नाटक</td>
<td>सन् 1953 ई.</td>
</tr>
</tbody>
</table>
8. भूभारोवरणनाटकम्
9. केलिकोतूहलम्
10. पालि-प्राकृत-व्याकरणम्
11. प्राकृत प्रकाश
12. गांधी विजय-नाटकम्
13. वीरपृथ्वीराज विजय नाटकम्
14. वीर प्रताप नाटकम्
15. कविता रहस्य
16. काव्य कलां
17. संधि-समास मंजूषा
18. रोगी मृत्यु विज्ञानम्
19. अन्योक्ति तरंगिणी
20. भगवच्छरणो उद्देश्या

सन् 1959 ई.
सन् 1959 ई.
सन् 1954 ई.
सन् 1954 ई.
सन् 1955 ई.
सन् 1958 ई.
सन् 1961 ई.
सन् 1961 ई.
सन् 1962 ई.
सन् 1962 ई.
सन् 1965 ई.
सन् 1966 ई.
सन् 1966 ई.

1966 ई. में भगवच्छरणो उद्देश्या का प्रकाशन हो रहा था और मधुरा प्रसाद दीक्षित दिवंगत हो गए।

अन्य रचनाएँ:—

इन पुस्तकों के प्रकाशन का श्रेय पंडित संदिष्ठिव दीक्षित को है जिन्होंने स्वयं कई पुस्तकों की भूमिकाएं लिखकर अपने पिता श्री की कृतियों की गणना की है। इस जानकारी के
लिए भक्तसुदर्शन नाटक तथा भगवच्चरणोद्तेष्का की भूमिका महत्वपूर्ण है जिन अन्य रचनाओं की सूचना इन भूमिकाओं से मिलती है वे हैं:-

1. आदर्शलघु कौमुदी 2. समासचिनतामणि 3. नारायण बलि निर्णय 4. कुर्वकलसकुत्थार
5. काशी शास्त्रार्थ 6. मन्दिर प्रवेश निर्णय 7. कलिदूत मुखमर्दन 8. जैन रहस्य
9. अतिनिर्धारण 10. भष्टचार साधारण 11. कौलवाम समीक्षा
12. निर्णय रत्नाकार 13. प्रसाद (पृथ्वीराज रासो की टीका)
14. कुडळगोत निर्णय 15. गौरी व्याकरण
16. अभिधान राजेन्द्र कोष का सम्पादन 17. जानकी परिणय
18. युविन्धर राज्य
19. भगवद् नाख-शिखर वर्णन शतक 20. नारद शिव वर्णन।

मथुरा प्रसाद दीर्घात कृत भगवच्चरणोद्तेष्का के प्रकाशण समय तक ही उनकी कई रचनाएं अप्रामाण हो चुकी थी। प्रकाशित रचनाओं में भी कई दुर्लभ हो गई थी भगवच्चरणोद्तेष्का की भूमिका के रूप में वर्गीकृत सूची इस प्रकार दी गई है।

1. नाटक:-

1. वीर प्रताप 2. भारत विजय 3. वीर पृथ्वीराजविजय नाटकम्
2. मुक्तक काव्य:-

9. कविता रहस्य  10. काव्य कला  11. अन्योक्तिररचिणी

12. भगवच्चरणोऽदेशा

3. कामशास्त्र:-

13. केलिकुतूहल

4. वैष्ण:-

14. रोगिमृत्युविज्ञानम्

5. दर्शन:-

15. मातुदर्शन

6. व्याकरण:-

16. पाणिनीय सिद्धान्त कौमुदी  17. पाली-प्राकृत-व्याकरण

18. प्राकृत प्रकाश  19. संधि-समास मंजुषा
20. समास विन्दामणि

7. धर्मशास्त्र:–

21. नारायण बली निर्णय
22. कुर्फककस्तकुठार

23. काशी शास्त्रार्थ
24. मंदिर प्रवेश निर्णय

25. मंदिर प्रवेश निर्णय
26. कलादृत मुख-मदरन

27. वर्ष संकर जाति निर्णय
28. जैन रहस्य

29. कोलवाम समीक्षा

8. विविध:–

30. अतिनिर्वचन
31. पृथ्वीराजसो (प्रथम द्वितीय समय)

32. पृथ्वीराजसो (प्रथम भाग हिंदी अनुवाद सहित)

इस सूची में कुल 32 रचनाओं का उल्लेख किया गया है। भगवद्गीतापोषक की
भूमिका में लिखित ये 32 रचनाएं ही 1966 ई. में उपलब्ध थी। ये ही उनकी प्रमाणिक
रचनाएं हैं।
नाटकों का परिचय

मधुरा प्रसाद दीशित के दस नाटकों में से तीन अप्रकाशित हैं। इनकी पाषुलिपि जीर्ण-शीर्ण अवस्था को प्राप्त कर चुकी है। प्रकाशित नाटकों में नाटक के लक्षणों से युक्त केवल सात ही नाटक हैं।

वीर प्रताप:-

सात अंकों में विभाजित यह नाटक ऐतिहासिक अकबर और महाराजा प्रताप का संघष भारतीय इतिहास के प्रख्यात पृष्ठ है। नाटककार ने अपनी कल्पना से इन घटनाओं को अकबर की राज्य विस्तार की इच्छा न मानकर अकबर द्वारा क्षत्रिय प्राप्ति की कामना मानी है। इस नाटक की रचना सन् 1935 को हुई थी।

एक बार तात्कालिन पंजाब में गवर्नर मालक महेली के यह कहने पर कि आजकल संस्कृत साहित्य में नाटक निर्माण की कल्पना भी असम्भवित है। पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्या आचार्य डॉ. लक्ष्मण स्वरूप ने सांख्य उनसे निवेदन किया था कि भगवान! ऐसी बात नहीं है, बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्री मधुरा प्रसाद दीशित ने अभी एक मौलिक तथा ऐतिहासिक नाटक लिखा है और पंजाब विश्वविद्यालय के छात्र उसका अभिनय करने जा रहे हैं। इस प्रकार वीर प्रताप नाटक का सफल अभिनय किया गया।
भारत विजय:–

सात अंकों में विभाजित यह भी ऐतिहासिक नाटक है। अंग्रेजों के आगमन से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के दो सौ वर्ष (1743-1947) के इतिहास को एक नाटक का रूप देना अत्यंत कठिन कार्य था। इस नाटक की रचना 1937 ई. में हुई थी। इस नाटक में महात्मा गान्धी के हाथों में शासन सुदृढ़ बनाकर अंग्रेजों के चले जाने का उल्लेख है। स्वतंत्रता से दशवर्ष पूर्व ही इस नाटक में अंग्रेजों के चले जाने के उल्लेख से एक ओर जहाँ महाराणा प्रसाद की इतिहास मर्मज्ञता और राजनीति की गहराई से समझने की क्षमता प्रकट हुई है वहीं दूसरी और उनकी राष्ट्र प्रेम की भावना भी अभिव्यक्त हुई है।

शंकर विजय:–

यह छ: अंकों का दार्शनिक नाटक है, यह इतिहास एवं है कि शंकराचार्य ने ही अद्वैत भव की प्रतिष्ठा के लिए भारत के अधिकांश भागों की बात की और भारत से बौद्ध धर्म का समुल उच्चदन कर दिया। शंकराचार्य की इसी शास्त्रार्थ विजय विवरण के कुछ अंशों को नाटकीय रूप मिला है। शंकराचार्य के चरित पर आश्रित इस नाटक का रूप दार्शनिक बन गया है।

वीर पृथ्वीराज विजय:–

यह भी छ: अंकों का ऐतिहासिक नाटक है, इसमें भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज और मुहम्मद गौरी के संघर्षों को नाटकीय रूप मिला है। इसकी घटनाएं

1
चन्दकृत पृथ्वीराज रासो से ली गई है। क्योंकि शब्द वेयी बाण द्वारा मुहम्मद गौरी का मारा जाना इतिहास सम्पत्त नहीं है। नायक पृथ्वीराज की आँखें फोड। दो जली हैं तथा अन्त में नायक तथा प्रतिनायक और कविचन्द सभी मारे जाते हैं। वीर रस प्रथान यह नाटक मंचन के सर्वथा उपयुक्त है।

भक्त सुदर्शन नाटक:—

इस नाटक का आधार इतिहास नहीं पूराण है। श्रीमद्भागवत में सुदर्शन की कथा बारह अध्यायों (14-25 अ.) में वर्णित है। उसकी रचना नाटककार के आश्रयदाता सोलन नरेश की धर्मपत्नी की इच्छा के अनुसार हुई तथा उन्हीं को समर्पित भी है।

यह नाटक छ. अंकों का है और सोलन नरेश के दरबार में ही नवरात्री के अवसर पर इसका अभिनव भी हुआ था। इसका प्रथम संस्करण 1954 में निकला। इसका प्रकाशन स्वयं दीक्षित जी ने किया। इनके पौत्र अयोध्यानाथ दीक्षित ने इसका हिन्दी अनुवाद किया। उनके पुत्र सवाशिव दीक्षित ने इसकी भूमिका लिखी है। गीत और स्थानों के प्रयोग की दृष्टि से यह नाटक महत्वपूर्ण है।

गायत्रिविजय नाटक:—

दो अंकों की यह रचना दक्षिण अफ्रिका और भारत में घटी गान्धी से सम्बन्ध अनेक घटनाओं को समन्त हुए है। 1910-1947 ई. तक फैली इन घटनाओं को दो भागों (अफ्रिका और भारत) से सम्बन्ध में बांटकर एक अंक में कई-कई दृश्य रख कर प्रस्तुत किया गया।
है। इसकी शैली "भारत विजय" के समान ही है। परंतु यह न एकांकी है और न पूर्ण नाटक। यह चरित काव्य का नाटकीय रूप है। इसमें स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख गांधीवादी नेताओं को पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन्हीं के प्रीत्यर्थ इसका प्रणुषन भी हुआ है।

शुभारोहरणमूः-

इसमें पांच अंक हैं तथा विष्णु पुराण के पंचम अंक के 35वें अध्याय में वर्णित यादव वंश के विनाश और कृष्ण की मृत्यु को नाटकीय रूप दिया गया है। साम्भ द्वारा दुर्वसा को चिढाना और उनके शाप से यादव कुल का नाश इसकी मुख्य घटनाएं हैं। साम्भ का अपने भाई के साथ टेनिस खेलते हुए रंगमंच पर प्रस्तुत करना प्राचीन कथा में विचित्र संशोधन है।

मुक्तक काव्य

1. अन्योक्ति तरंगिणी:- मधुरा प्रसाद दीक्षित की अन्योक्ति तरंगिणी समय-समय पर लिखी गई उनकी मुक्तक रचनाओं का संग्रह है। यह दो शतकों में विभाजित है। कुल 200 श्लोक हैं और उनका प्रकाशन उनके जीवन के अंतिम वर्ष 1966 में हुआ। इसका प्रकाशन भी दीक्षित ने स्वयं किया है। सभी 200 पद अन्योक्ति परक हैं। अन्योक्ति तरंगिणी की कुछ अन्योक्तियां आधुनिक सन्दर्भों से भी जुड़ी हुई हैं।

2. भगवद्धरणोदेशा:- मधुरा प्रसाद दीक्षित इस कृति के रचयिता और व्याख्याकार है। इसका प्रकाशन उनके ज्येष्ठ पुत्र सदाशिव दीक्षित ने उनके दिवंगत होने के उपरान्त 1966 ई. में
किया था। इसके कुल 4 श्लोक हैं। प्रथम श्लोक में 20, द्वितीय श्लोक में 25, तृतीय श्लोक में 25, चतुर्थ श्लोक में 26, पंचम श्लोक में 25 तथा षष्ठ श्लोक में 25 श्लोक हैं। प्रत्येक श्लोक में भगवान के चरण के अंगुष्ठ नख आदि के एक-एक अवयव का वर्णन किया गया है। ‘प्रकाशन्तरेणाश’ कह कर एक के बाद दूसरा श्लोक प्रस्तुत किया गया है। सभी में उद्देश्य अलंकार का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है।

3. कवि शिष्य विषयक:- इस लघु काव्य रचना में मधुरा प्रसाद दीक्षित ने समस्या पूर्ति के अनेक प्रकारों का दर्शन करते हुए स्वरूपित सरल सरस कविताएं दी हैं।

4. काव्य कला:- यह छन्द शास्त्रीय ग्रन्थ है। माघ (लघु गुरु) गण आदि के परिचय सहित इसमें विविध छन्दों के लक्षण और उदाहरण दिये गए हैं।

3. कामशास्त्रीय:-

कैलिकुसूहल:- काम शास्त्र पर आधारित इस रचना में 16 तरंग हैं। उसमें विभिन्न योगों का वर्णन किया गया है। हस्त भौसुन जन हाँडियों के साथ-साथ दीक्षित जी ने अपनी अनुभूति अनेक औषधियों का भी उल्लेख किया है। कामशास्त्र और वैधक दोनों का यह मिश्रित ग्रन्थ है। पच्चम तरंग नायिका भेद, दशम और पंचदशमू तरंग वैधक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। 16वां तरंग योगशास्त्र और कामशास्त्र के सम्बन्ध समन्वय पर है।
4. वैष्णवः-

रोगिमृतुविविज्ञानम्: मृत्यु समय का ज्ञान कराना तथा चिकित्सक किस रोगी की औषधि
न करे। इसका विस्तृत वर्णन इसमें किया गया है मृत्युमुख रोगी की स्थिति चेतना चिह्न
नियत मरण व्यापक लिंग गमरिष्टम् इसका वर्ण है। ये लक्षण चरक, मुक्त और वामभट्ट
आदि आर्य ग्रन्थों पर आधारित हैं। इसमें आठ अध्याय हैं।

5. दर्शनः-

मानवदर्शनः श्री माँ आनन्दमयी के अस्फूट उच्चरित आठ मन्त्रों की विशद व्याख्या है।
इनकी व्याख्या में व्यक्त जो ने अपने विश्वदेश दर्शन सम्बन्धी एवं बीज मन्त्र सम्बन्धी ज्ञान एवं
विद्वता का परिचय दिया है।

6. व्याकरणः-

1. पाणिनीय सिद्धान्त कौमुदी 2. संस्कृत समास मंजूषा तथा 3. समास
विन्दामणि का मुख्य आधार पाणिनी कृत अंतर्तपियाः है। सरल विस्तृत एवं सोदाहरण हिंदी
टिकाएं इनकी विशेषताएं हैं। 4. प्राकृत प्रकाश वरस्वचि के इस ग्रन्थ पर मधुरा प्रसाद दीक्षित
ने चंद्रिका नामक संस्कृत और प्रदीप नामक हिंदी टीका लिखी है। प्राकृत के सभी बेदों पर
भी प्रकाश ढाला है। 5. पालि प्राकृत व्याकरण, प्राकृत व्याकरण के आधार पर केवल 70
सूत्रों में प्राकृत के सभी शब्दों के रूप नियमविभक्त कर दिए गये हैं। ये सभी व्याकरण सम्बन्धी
ग्रन्थ हिंदी टीका सहित छात्रों के उपयोगार्थ लिखे गए हैं और उपलब्ध हैं।
7. धर्मशास्त्र:-

धर्मशास्त्र से सम्बन्धित जितनी कृतियों का उल्लेख मिलता है उनमें निर्णय रत्नाकर को छोड़कर सभी लघुपुस्तिकाएं हैं। डॉ. राम जी उपाध्याय ने दीक्षित जी की कृतियों में इसका उल्लेख किया है। पर गौरी व्याकरण की भांति यह रचना भी दीक्षित जी की नहीं है। शेष रचनाओं का आधार धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ निर्णय सिन्धु है।

विविध:-

इस प्रकार की रचनाओं में अति निर्वचन उपलब्ध नहीं है। चन्द कृत पृथ्वी राज रासों की टीकाओं में दो रचनाएं उपलब्ध हैं।:-

क. असली पृथ्वीराज रासो :- हिन्दी टीका मूल सहित (प्रथम, द्वितीय समय)
ख. असली पृथ्वी राज रासो :- हिन्दी टीका मूल सहित (प्रथम भाग)

नाटकों का वर्गीकरण:-

मदुरा प्रसाद दीक्षित ने सातो नाटकों का इतिहास के आधार पर वर्गीकरण करते पर उसके निम्नलिखित वर्ग बनते हैं:-

क) पौराणिक नाटक:- इनकी कथावस्तु पुराणाभिषेक है:-

1. भक्त सुदर्शन नाट्कम् (देवी भागवत)
2. भू भारोख्चरणम् (विष्णु पुराण)

ख) ऐतिहासिक नाटक:— इन्हें मध्ययुगीन तथा भारतीय इतिहास के स्वातंत्र्य संघर्ष से सम्बन्ध होने के कारण दो वर्गों में रखा गया है।

1. मध्ययुगीन संस्कृत नाटकम्

   1. शंकर विजय नाटकम्
   2. वीर प्रताप नाटकम्
   3. पुष्पी राज विजय नाटकम्

शंकराचार्य विजय का सम्बन्ध धार्मिक इतिहास से है। पर वे भी मध्ययुग से सम्बन्ध रखते हैं तथा मध्ययुग पर उनका व्यापक प्रभाव पड़ा है।

2. आधुनिक ऐतिहासिक नाटक (स्वातंत्र्य संघर्ष से सम्बन्ध)

   1. भारत विजयनाटकम्
   2. गान्धि विजय नाटकम्

अधिम अध्याय में मधुरा प्रसाद दीक्षित कृत नाटकों की कथावस्तु को लिया गया है।